IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पर्यावरण जागरूकता के प्रति बी.एड. प्रशिक्षुओं का तुलनात्मक अध्ययन

Karmveer, Ph.D. Scholar.

Singhania University, Jhunjhunu, Rajasthan

Co-Author Dr. Shivkant Sharma, Department of Education

Singhania University, Jhunjhunu, Rajasthan

सार

मानव ने पर्यावरण के बारे में शायद ही कभी इतनी चिन्ता प्रदर्शित की होगी जितनी कि वर्तमान में हमें देखने को मिलती है । आज हम पर्यावरण क्रांति के दौर से गुजर रहे हैं । पारिस्थितिक ज्ञान के प्रकाश में अब यह स्पष्ट हो चुका है कि मनुष्य है पर्यावरण का ही एक भाग है । उससे पृथक या स्वतंत्र नहीं है कि मनुष्य पारिस्थितिक तंत्रों की अनेक भोजन श्रृंखलाओं का एक सुमेध अंतजीव हैं । हम अपने पर्यावरण के साथ कैसा व्यवहार करते हैं इसी पर हमारा भविष्य निर्भर है । जनसामान्य में भी जो पर्यावरण के प्रति जागरुकता आयी है वह तभी उपयोगी हो सकती है जब उसे प्रभावी कार्य रूप में परिणित किया जा सके । इस कार्य में पारिस्थितिकी का ज्ञान बहुत सहायक होता है । यह पर्यावरणीय समस्यायें बढ़ी हैं तो उनके साथ - साथ सम्बंध में क्या किया जाना चाहिए । इस तरह की सोच के प्रति जागरुकता को इस तरह से विकसित करने की आवश्यकता है जिससे कि पर्यावरण की समस्याओं से निपटा जा सके।

मूल शव्द : पर्यावरण, जागरूकता, प्रशिक्षु आदि

प्रस्तावना

ब्रह्माण्ड के विभिन्न क्षेत्रों में इतना अधिक प्रदूषण फैलता ही जा रहा है । अतः पर्यावरण के प्रति जागरुकता रखना , आज हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता है । विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादन क्षमता बढ़ाने के साथ - साथ पर्यावरण को संतुलित रखने सम्बंधी समस्यायें निरन्तर उभर कर सामने आती ही जा रही हैं । सुविधाओं के विस्तार ने इस समस्या को और अधिक जटिल बना दिया है । जल , थल , नभ , वायु में हो रहे निरन्तर परिवर्तनों ने मानव को पर्यावरण की समस्या पर फिर से विचार करने हेतु बाध्य किया है । वर्तमान में हमारे सामने प्रदूषण की समस्या एक बड़ी समस्या के रूप में सामने आयी है । आज हम अपने जीवन को सुखी बनाने में पर्यावरणीय संसाधनों का इतना अधिक दोहन कर रहे हैं जिससे कि प्रदूषण की समस्या के साथ - साथ हमारे संसाधनों के भण्डार में निरन्तर कमी आती जा रही है और पर्यावरण में हो रहे परिवर्तनों की एक जटिल समस्या जो " पृथ्वी सम्मेलन " के समय थी कि ओजोन परत कितनी तेज गति से पतली होती जा रही है । आज विश्व में अमेरिका एक ऐसा देश है जो कि संसाधनों का बहुत अधिक दोहन कर रहा है और इसी का दुष्परिणाम है कि आज विभिन्न प्रकार की पर्यावरणीय समस्यायें हमारे सामने आ रही हैं । आज हमें इन समस्याओं के प्रति बहुतअधिक जागरुक होने

की आवश्यकता है और हमें अपने दृष्टिकोण को इस तरह का बनाना होगा , जिससे कि पर्यावरण के सन्तुलन को बनाये रखा जाये और जब तक पर्यावरण के साधनों के बहुत अधिक इस्तेमाल और इसके दुरुपयोग को नहीं रोका जाये , तब तक इस समस्या को नहीं सुलझाया जा सकता है । प्रकृति में थोड़ा - सा होने वाला परिवर्तन तो प्रकृति द्वारा खुद ठीक कर लिया जाता है लेकिन आज जो बड़े - बड़े परिवर्तन हो रहे हैं सभी मानवीकृत हैं और यही परिवर्तन पर्यावरण के लिए खतरे की घण्टी है । वह चाहे प्रदूषण के रूप में हानि वाला परिवर्तन हो या ओजोन परत के रिक्त करने सम्बंधी ।

पर्यावरण के अर्थ

पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है । ' परि ' और ' आवरण ' जिसका अर्थ हुआ जो हमें चारों ओर से ढके हुए है या आवृत्त किये हुए है , वह पर्यावरण है । Environment शब्द संजपद भाषा के ' Environ ' से बना है जिसका अर्थ है ' Around us ' अर्थात् जो वस्तुऐं हमें चारों तरफ से घेरे हुए है वह पर्यावरण के अन्तर्गत आती हैं ।

परिभाषा

" पर्यावरण या वातावरण वह शब्द है जो समस्त बाह्य शक्तियों , प्रभावों और परिस्थितियों का सामूहिक रूप से वर्णन करता है । जो जीवधारी के जीवन , स्वभाव , व्यवहार और अभिवृद्धि विकास तथा प्रौढ़ता पर प्रभाव डालता है ।
" पर्यावरण में वह सभी भौतिक , रासायनिक , जैविक एवं सांस्कृतिक कारक आते हैं जो किसी भी तरह से जन्तुओं के जीवन को प्रभावित करते हैं । " हमें चारों तरफ से प्राकृतिक एवं सामाजिक आवरण घेरे हुए हैं । इस दृष्टि से हम पर्यावरण को निम्न प्रकार से वर्गीकृत कर सकते हैं पर्यावरण एक समनिष्ट है । मानव इस समीष्ट का एक अंग है । पर्यावरण में यह सब कुछ सम्मिलित किया जाता है । जो मनुष्य की जीवन पर्यन्त कार्य प्रणाली तथा जीवनशैली को प्रभावित करता है । मनुष्य के चारों ओर के सभी पक्षों को पर्यावरण में सम्मिलित किया जाता है । वह स्वतंत्र नहीं वरन् वह अपनी एक महत्वपूर्ण एवं उच्च स्थिति रखता है |

उद्देश्य

1. लिंग के आधार पर बी.एड. प्रशिक्षुओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना |
2. विषय के आधार पर बी.एड. प्रशिक्षुओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना |

परिकल्पनाएँ

1. लिंग के आधार पर बी.एड. प्रशिक्षुओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नही है |
2. विषय के आधार पर बी.एड. प्रशिक्षुओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नही है |

साहित्य कि समीक्षा

रेड्डी डिम्पल, एवं तिवारी संजीत. (2017) "रायपुर जिले के उच्चतर अध्यिमक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन" प्रस्तुत अध्ययन हेतु रायपुर जिले के 30 स्कूल का का चयन किया गया है | जिसमे 15 शासकीय और 15 अशासकीय विद्यालय शामिल है | 15 शासकीय स्कूल के 20-25 विद्यार्थी 15 अशासकीय स्कूल के 20 – 25 विद्यार्थी 1000 विद्यार्थियों का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया है | प्रस्तुत अध्ययन के आंकड़ों के संकलन के लिए प्रवीन कुमार झा द्वारा निर्मित मापनी का चयन किया गया है | प्राप्त प्रदत्तो के विश्लेषण के लिए टी परीक्षण का प्रयोग किया गया एवं निष्कर्ष में पाया गया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालय एवं निजी विद्यालय के छात्र-छात्रों के पर्यावरण जागरूकता के बिच अंत नही पाया गया है |

मंगेश , गौरव शीतल , मंगेश कृष्णाराव (2015) ने " शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का अध्ययन " प्रस्तुत शोध विषय पर अपना शोधकार्य करके निष्कर्ष में पाया कि महिला एवं पुरूष अध्यापकों की शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर है । इन्होंने अध्ययन में पाया कि निजी विद्यालयों के महिला तथा पुरूष अध्यापकों की इस अधिनियम के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर है । सरकारी विद्यालयों के महिला तथा पुरुष अध्यापकों में भी शिक्षा अधिनियम के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर है ।

शोध विधि

शोधकत्री ने इस कार्य के लिए बी.एड. प्रशिक्षुओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता की वर्तमान स्थिति का पता लगाने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है |

अध्ययन का क्षेत्र प्रस्तुत शोध वैशाली (बिहार) में प्रायोजित किया गया है | इस शोध में समष्टि के रूप में वैशाली के बी.एड.कॉलेजों के प्रशिक्षुओं का चयन किया गया है |

जनसंख्या या समष्टि

इस अध्ययन में वैशाली के बी.एड.कॉलेजों के प्रशिक्षुओं को शामिल किया गया है |

प्रतिदर्श

प्रतिदर्श के अंतर्गत छः बी.एड. कॉलेजों को शामिल किया गया है |

प्रदत्त विश्लेषण

परिकल्पनाओ का परीक्षण

परिकल्पना 1

1. लिंग के आधार पर बी.एड. प्रशिक्षुओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नही है |

लिंग के आधार पर बी.एड. प्रशिक्षुओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता का टी-मूल्य

लिंग	संख्या	माध्य	मानक-विचलन	टी-मूल्य	अभियुक्ति
छात्र (1)	50	35.4	9.56	1.25	सार्थक नही
छात्रा (2)	50	38.1	11.1		

(0.05 सार्थकता स्तर के आधार पर 'टी' मूल्य का मान 1.98 है |)

उपर्युक्त तालिका को देखने से स्पष्ट होता है कि शोधार्थी द्वारा प्राप्त मान 1.25 है जो मान्यकृत तालिका टी मान (1.98) से कम है | अतः नल परिकल्पना स्वीकृत की जाती है | अर्थात लिंग लिंग के आधार पर बी.एड. प्रशिक्षुओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नही है |

परिकल्पना 2

विषय के आधार पर बी.एड.प्रशिक्षुओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नही है

विषय के आधार पर बी.एड.प्रशिक्षुओं का पर्यावरण प्रति जागरूकता का टी-मूल्य

विषय	संख्या	माध्य	मानक-विचलन	टी-मूल्य	अभियुक्ति
कला (1)	50	34.46	9.24	1.069	सार्थक नही
विज्ञान (2)	50	32.66	7.98		

(0.05 सार्थकता स्तर के आधार पर 'टी' मूल्य का मान 1.98 है |)

उपर्युक्त तालिका को देखने से स्पष्ट होता है कि शोधार्थी द्वारा प्राप्त मान 1.069 है जो मान्यकृत तालिका टी मान (1.98) से कम है | अतः नल परिकल्पना स्वीकृत की जाती है | अर्थात विषय के आधार पर बी.एड.प्रशिक्षुओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर है |

निष्कर्ष :-

यह अध्ययन विषय के आधार पर बी.एड.प्रशिक्षुओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता से सम्बन्धित है | शोधार्थी ने अपने शोध से सम्बन्धित सांख्यिकी परीक्षणों के परिणाम एवं व्याख्या के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त किया की विषय के आधार पर बी.एड.प्रशिक्षुओं का पर्यावरण प्रति जागरूकता पर लिंग तथा विषय के आधार पर कोई सार्थक प्रभाव नही पड़ता है |

सन्दर्भ सूची :-

- अग्रवाल.पी.के. 'पर्यावरण एवं नदी प्रदूषण' आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 1993 .
- गोपाल सिंह. 'पर्यावरण शिक्षा' लायल बुक डिपो, मेरठ 1997 .
- रेड्डी. डिम्पल. एवं तिवारी संजीत. पी.एच.डी. शोधकर्ता, (2017) "*रायपुर जिले के उच्चतर अध्यिमक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन*". मैट्स यूनिवर्सिटी. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एडवांस एजुकेशन एंड रिसर्च. वोल्यूम 2. इसु 2. पेज न. 23-25.
- एम . गौरव . शीतल . एम. कृष्णाराव. (2015). "*शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का अध्ययन*". www.shodhganga.com